

इस अंक में...

- 8** | 'आप' हो महत्वपूर्ण
10 | समसामयिकी घटना संग्रह
11 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ
19 | आर्थिक घटना संग्रह

- विश्व की 500 बड़ी कम्पनियों की सूची में भारत की 7 कम्पनियाँ शामिल
- केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटकों के जारी किए आँकड़े
- भारत की आर्थिक विकास दर रहेगी 7.8 प्रतिशत : एडीबी

23 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- जेपी आन्दोलनकारियों को पेंशन देने की घोषणा
- महाराष्ट्र सरकार ने मंजूरी की श्यामा प्रसाद मुखर्जी जन वन विकास योजना
- मुम्बई बम धमाके के आरोपी याकूब मेमन को नागपुर की जेल में फाँसी
- रेलवे ने तत्काल टिकट बुकिंग नियम में किया संशोधन

27 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूस और मध्य एशिया के पाँच देशों का दौरा पूरा किया
- ग्रीस की संसद ने कर्ज की कड़ी शर्तों को दी मंजूरी
- भारत-सिंगापुर ने समुद्री सहयोग बढ़ाने के लिए किया समझौता

31 खेल खिलाड़ी

- श्रीलंका दौरे के लिए टीम इंडिया की घोषणा
- विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट 2015
- सतनाम सिंह अमरीका की बास्केटबाल लीग एनबीए हेतु चयनित
- वेसलिन टोपालोव ने नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट-2015 जीता
- ली चोंग वेई ने कनाडा ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट 2015 अपने नाम किया

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

- 75** भारत में भू-क्षेत्रफल मापन की इकाइयाँ : चकबन्दी लेखपाल विभाग की नियुक्तियों हेतु
- 78** प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 79** तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक 65 का परिणाम
- 80** रोजगार अवसर
- 82** समसामयिक घटनाएं : जनवरी 2015 से जून 2015 तक

हल प्रश्न-पत्र

आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक में कार्यालय सहायक सम्मिलित लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

- 38** तर्कशक्ति
- 43** सामान्य सचेतता
- 46** आंकिक क्षमता
- 49** English Language
- 53** सामान्य हिन्दी
- 56** कम्प्यूटर ज्ञान
- 58** उत्तर प्रदेश राजस्व लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु विशेष योजना, पाठ्यक्रम एवं हल प्रश्न-पत्र
- 67** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित विशेष हल प्रश्न
- 69** रेलवे भर्ती सेल (कोलकाता) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिस्टर' की नहीं है.

- ⇒ सम्पादक : महेन्द्र जैन
⇒ रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2
⇒ सम्पादकीय ऑफिस
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005
फोन- 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स- (0562) 4053330, 4031570
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in
कस्टोमर केयर: care@pdgroup.in
⇒ दिल्ली ऑफिस
4845, असारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002
फोन- 011-23251844/66

- ⇒ पटना ऑफिस
पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ
पटना-800 003
फोन-0612-2673340
मो-09334137572
⇒ कोलकाता ऑफिस
28, चौधरी लेन, श्याम बाजार
कोलकाता- 700 004
फोन- 033-25551510
मो- 07439359515

- ⇒ हैदराबाद ऑफिस
1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद-500 044
फोन- 040-66753330
मो- 09391487283
⇒ हल्द्वानी ऑफिस
8-310/1, ए. के. हाउस
हीरानगर, हल्द्वानी,
जिला-नैनीताल- 263139 (उत्तराखण्ड)
मो- 07060421008

- ⇒ लखनऊ ऑफिस
B-33, ब्लॉक स्क्वायर, कानपुर
टैक्सो स्टैण्ड लेन, मवईया,
लखनऊ- 226 004
फोन- 0522-4109080
मो- 09760181118

यह सच है हर इंसान अपने भीतर अनंत शक्ति, बुद्धिमत्ता, दक्षताएं एवं ज्ञान समाए हुए हैं। ईश्वर के सर्वाधिक निकट का स्वरूप इंसान के भीतर है, ज़रा सी जागृति व सम्यक् दिशा में गति उसे अपने भीतर के ईश्वरत्व से मुलाकात करा सकती है। वहीं ज़रा-सा प्रमाद व गलत दिशा में गति उसे अपने वास्तविक ईश्वरीय स्वरूप से कोसों दूर कर सकती है। सब कुछ क्षण में सम्भव है। बस, जरूरत है इंसान को अपने आपके लिए हर क्षण विवेकपूर्वक गति की। विवेकपूर्ण चर्या की। विवेकपूर्ण चर्या से तात्पर्य ऐसी हर प्रवृत्ति से है जो चाहे हमारे मन में चल रहे विचारों की हो, मुख से उच्चरित वचनों की हो अथवा शारीरिक क्रियाकलापों की हो—यदि वह हमारे भीतर के होश के साथ हो, ज्ञान व सद्भाव के साथ सम्पन्न हो, सबके लिए सुखदा रूप हो, किसी को बाधा-कष्ट देने वाली न हो तो वह चर्या (प्रवृत्ति) विवेकपूर्ण है अन्यथा अविवेकी। विवेक का सम्बन्ध आपके भाग्य से नहीं आपकी बुद्धिमत्ता से है। विवेक का सम्बन्ध उम्र, पद या पैसे से नहीं वरन् प्रतिभा, अन्तःप्रज्ञा गुरु कृपा से है। किसी-किसी में यह स्वस्फूर्त होती है, जन्मजात होती है जिसे प्रायः लोग ईश्वरीय देन कहते हैं। किसी-किसी में यह अनुभवी लोगों के पास रहने से, उनको देखने, सुनने व समझने से आती है तो कुछ लोगों में यह विवेक प्रज्ञा स्वयं अनुभवों से गुजरने से, दुनियादारी की समझ से या ठोकरें खा-खाकर जागृत होती है।

उपर्युक्त तीनों में से किसी भी उपाय से हो, किन्तु यह जरूरी है कि हमारे भीतर विवेक जागे। यह मात्र किताबें पढ़ने से तो नहीं आता फिर भी वे किताबें जो अनुभव ज्ञानियों का अनुभव-सार हो हमारे विवेक को जगाने में सहयोगी अवश्य बनती हैं। जो किताबें आन्तरिक ज्ञान की स्फुरणा से सृजित हुई हों, उन्हें ही आगम, आयत, उपनिषद्, वेद एवं सूत्र कहा जाता रहा है। आज भी अनेक ऐसी पुस्तकें हमारे लिए उपलब्ध हैं, जो हमारे भीतर के वास्तविक स्वरूप से हमारा परिचय कराएँ व हमें ईश्वरीय आभा के निकट ले जाएँ। जैसे संबुद्ध महापुरुष स्वामी राम के वचन, आचार्य रजनीश के प्रवचन, आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी की वागरणा, लुईस एल-हे की पुस्तकें, दादा भगवान मूलजीअबाजी भाई पटेल की पुस्तकें एवं अन्य अनेक लेखकों की आंतरिक स्फुरणाओं से सृजित लेखन-प्रकाशन।

यहाँ हम इन कुछ पुस्तकों के सारभूत संदेशों को आपके साथ साझा करें जिससे आप भी अपनी विवेक प्रज्ञा को सम्यक् गति दे सकें—

(1) 'आप' हो महत्वपूर्ण—वेद, कुरान, बाईबिल, गुरुग्रंथ साहिब, आगम, शास्त्र, सूत्र व अनेक मूल्यवान ग्रंथों को पढ़कर एक बात सहजता से समझ में आती है कि हमारी ज़िन्दगी जैसी भी है उसके आज के स्वरूप के लिए निर्णायक कोई भगवान, कर्म, नियति या प्रारब्ध नहीं वरन् हम स्वयं हैं। हम ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं हमारी दुनिया के लिए। अगर हम प्रसन्न हैं, हर हाल में प्रसन्न रहना सीख जाते हैं तो हमारी दुनिया खुशनुमा हो जाती है, किन्तु हम ही दुःखी रहने के आदी हैं तो हमारी ज़िन्दगी के दुःखों का



“दूसरों के दुःख-दर्द को समझना और उन्हें इससे बाहर आने में सहायता देना, स्वयं को प्रसन्न रखने और दूसरे के चेहरे पर मुस्कान बिखरने का आसान उपाय है। जब आप किसी के जीवन में कोई सकारात्मक प्रभाव लाते हैं, तो आप अपने स्वयं के जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव लाते हैं। कुछ ऐसा करो जो आप से भी महान् हो—ऐसा कुछ जिससे दूसरों को प्रसन्न रहने या उनके कष्टों को कम करने में सहायता मिले।

दूसरों को हँसाने के लिए स्वयं को भी हँसना पड़ता है।”

कोई पारावार ही नहीं रहेगा। आपके सुख-दुःख के लिए आप ही जिम्मेदार हो। अपने शुभ-अशुभ कर्मों के रचयिता भी आप स्वयं हो। ईश्वर आपके भीतर मौजूद सृजन क्षमता है न कि आपमें भिन्न कोई निर्णायक शक्ति। अतः आपकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वयं आपके प्रति है। आप ही स्वयं को ज्ञान देकर सतत् विकसित करने के लिए अथवा आलसी बनकर इद्रिय सुखों में तल्लीन रहने के लिए जिम्मेदार हो। इस जीवन की गति आपके स्तर के अनुरूप है। आप जिस स्तर पर हो, आपकी खातिरदारी उसी के अनुरूप होगी। गुलाम की गुलामों के अनुरूप व मालिक की मालिक के अनुरूप।